International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:3049-2017
IJMH 2025; 2(2): 25-26
www.themultijournal.com

Received: 22-04-2025
Accepted: 24-04-2025
Publish : 25-04-2025

प्रोफेसर राजू बागलकोट
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला-विश्वविद्यालय, विजयपुर,

Correspondence:
Prof. Raju Bagalkot.
HOD Department of Hindi,
Karnataka State Akka mahadevi-women University, vijayapura .

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध

प्रो. श्रीमती राजु बागलकोट

प्रस्तावना

आधुनिक बोध का मतलब है- 'अर्वाचीन काल में नवीन जानकारी हासिल करना।' वैसे इस विषय का अर्थ बहुत ही लंबा-चौड़ा फैलता रहता है। आधुनिक धरातल पर लिखने वाले प्रत्येक लेखक या लेखिकाओं के रचनाओं में आज की नवीन युवा पीढ़ी के लिए कुछ ज्ञान, जीने लायक तसल्ली आदि देने का प्रयास किया जाता है। उन विचारों को पढ़कर पाठक निजी जीवन में जीने के लिए उन रचनाओं से कुछ न कुछ तो जरूर स्वीकारता है। चन्द लेखक अपनी ओर से किताबों में वक्तव्य की हैसियत से कह देते हैं। और चन्द लेखक उपन्यास कहानियों में पात्रों के माध्यम से अपने विचारों को भावी पाठक तक पहुँचाने में मदद होते हैं। इन सबको सोचने-समझने के बाद ऐसा लगता है कि लेखक ही समाज का निर्देशक है। आधुनिक युग में लेखक ही समाज की दो आँखें हैं। इसलिए महान युग-पुरुषों का नाम आज भी बड़े चाव से याद किया जाता है। उनका आदर्शवाद ही आज की पीढ़ी को आध्यात्मिक विचारधारा की ओर आकृष्ट करती रहती है। अच्छाई-बुराई की जाँच-पड़ताल कर ही इन्सान आज भी नाप-तौलकर जमीन पर पैर रख रहा है।

इस जमीन बोध के ऊपर विचार करेंगे तो, प्रेमचन्द, प्रसाद, पन्त, निराला आदि महान सृजनकर्ताओं का नाम लेना जरूरी है। उन महान साहित्यिक हस्तियों के बदौलत ही आज आधुनिक उपन्यास-साहित्य इतनी प्रमुखता पा चुकी है। उनका ज्ञान, उनकी दी हुई तसल्ली, उनकी धीरजता, संतोष ही आज हमें जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

बीज शब्द : प्रणाली, तसल्ली, यथार्थवाद, धीरजाता, हैसियत दृस्टीकोण, दर्शाया

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में भी आधुनिक बोध की बात कड़कती बिजली के समान पाठक के दिमाग तक बड़ी आसानी से पहुँच जाती है। उनके उपन्यासों में पाठकों की समस्याओं से लेकर युगीन संदर्भ में समाज तथा देश की बहुत ही महत्वपूर्ण बातों को लेखिका ने दर्शायी है। पिछड़े निम्न गरीबों की शिक्षा के प्रति 'कठगुलाब' की असीमा, खुद एक सफल पत्रकार तथा समाज सेविका होकर संसद में प्राथमिक शिक्षा संबंधित आवाज उठाती है। उसका एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है- "मैं तो कहती हूँ, तमाम पब्लिक स्कूल बंद कर दिए जाने चाहिए। सबके लिए, अमीर हो, चाहे गरीब, स्थानीय स्कूलों में शिक्षा लेना अनिवार्य होना चाहिए। तब अमीर लोग पूरा ख्याल रखेंगे कि स्कूल बढ़िया चलें। तभी साधारण बच्चों को ढंग की शिक्षा मिल पाएगी। सबको एक जैसी स्कूली शिक्षा मिलेगी तो पूरे देश में अवसर की समानता होगी। फिर किसी को आरक्षण की जरूरत नहीं रहेगी ।"[1]

आज विज्ञान के कारण बच्चों के जन्म को लेकर संशोधन चल रहे हैं। उन पर बातें करता हुआ विपिन कहता है- "आज कल टैस्ट-ट्यूब शिशुओं की बड़ी चर्चा है। पर देखिए तो, इस पद में कैसा विरोधाभास निहित है। टैस्ट-ट्यूब शिशु ! जैसे पूरी तरह ट्यूब में पनपकर मानव शिक्षा जन्म लेता हो। पर नहीं, टैस्ट-ट्यूब में बीज अंकुआने तक की यात्रा तय कर सकता है, बस ।"[2] मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों के पात्रों के मुँह से आधुनिक वैज्ञानिकता तकनीकि सुविधाएँ, तथा टूटते परिवारों को महान युवा-पुरुषों के विचारों तसल्ली आदि सब प्रकार से आधुनिक समाज को एक नये तरीके से शिक्षा प्रणाली का प्रयोग किया है। उनका 'अनित्य' नामक उपन्यास में 'अनित्य' पात्र भगतसिंह के विचारों को लिए चलता है। उसके कुछ विचार आज भी समाज को लाभान्वित कर सकते हैं। समाज को पंगु बनाना और इन्सान को मानसिक तौर पर मजबूत करने के लिए मृदुला गर्ग के उपन्यासों में दिखाई देती है। 'अविजित' सारे देश की जनता को शिक्षा देकर साक्षर बनाना चाहता था।

इसलिए चंदे से पैसे इकट्ठा करके निम्न असहाय गरीब लड़के लड़कियों को उन्नत दिलाने में मदद करता है।

इस प्रकार आधुनिक-बोध संबंधित विचारधारा को लेकर मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों में प्रारंभ से ही समान अधिकारों की पक्षधर को अपनाई है। 'चित्तकोबरा' में तो यह विचार बहुत प्रखरता के साथ उभरकर आता है। 'उसके हिस्से की धूप' में जहाँ समान अधिकारों की माँग तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आग्रह है वहाँ 'चित्तकोबरा' में उद्दाम प्रेम, स्वातंत्र्य चित्रण और सामाजिक दायित्व का बड़ा संतुलन है। इसलिए शायद इसमें रिचर्ड, मनु और महेश में से कोई भी छोटा नहीं पड़ता। तीनों पात्र अपनी नैतिक साहस तथा उदारता में एक-दूसरे को मात्र देते हुए नजर आते हैं। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि यह उपन्यास आदर्श स्थितियों से बुना गया है। ऐसे उपन्यास यथार्थ स्थितियों से भला कैसे मेल खाते हैं ? यानी आदर्शवाद के साथ यथार्थ दृष्टिकोण पर भी लेखिका लेखनी चलाने का प्रयास तो थोड़ा-बहुत किया है। अगर हम 'वंशज' की ओर आँख उठाकर देखते हैं, तो वहाँ नग्न यथार्थवाद को हम पाते हैं। आधुनिक परिवारों की समस्या की उसकी समस्या है। ऐसा नहीं कि वह आदर्शवाद भी नहीं है। उन दोनों के भीतर से लेखिका की कलम दौड़ निकली है। डॉ. किर्तिकेसर जी का कहना है- "मैं मानता हूँ किकहानी लिखने के लिए 'स्टैटिंक रिथेल्टी' की समझ से काम चलाया जा सकता है, पर उपन्यास के लिए जब तक यथार्थ के डायनमिज्म से परिचय प्राप्त नहीं होगा, ऐसा उपन्यास नहीं लिखा जा सकता जो पाठक की संवेदनशीलता और आधुनिक भाव-बोध को उत्प्रेरित कर सके ।"[3] और यह निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक कथाकार पाठक की हद से गुजरने से नहीं कतराना चाहिए। सृजनकर्ता तब तक बड़ा नहीं हो सकता, जब तक उसमें यह गुण आवश्यक रूप से विद्यमान न हो।

इस प्रकार मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक-बोध को बहुत ही कुशलता से दर्शाया गया है। उनके उपन्यासों से नई पीढ़ी को एक नया जीवन दृष्टिकोण मिलता है। प्रत्येक पात्र नये विचारों के साथ पाठकों के सामने आते हैं। इन विधाओं को हम मृदुला गर्ग के 'वंशज', 'अनित्य', 'कठगुलाब' आदि उपन्यासों में प्रमुख रूप से देख सकते हैं। सवाल और जवाब दोनों एक साथ देने में लेखिका सक्षम रही है।

संदर्भ ग्रन्थ

[1] डा. शोभा पालीवाल-'अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना' – पृ. 75

[2] डा. नरेंद्र मोहन- 'संचितना' (द्विमासिक) जुलाई – सितम्बर- 1975

[3] वंशज – पृ 1